International Journal for Multidisciplinary Research
Plagiarism & Intellectual Property Rights in Digital Age (PIPRDA-2023)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

साहित्य लेखन में डिजिटल व्यवस्था का प्रभाव

डॉ .रेखा कौशल

सहायक प्राध्यापक ,हिंदी, शास.नेहरू स्नारकोत्तर महाविधालय आगर मालवा

मानव मस्तिष्क एक ऐसा अद्भुत यंत्र जो मानव जीवन को लौकिक से अलौकिक जगत तक की यात्रा कराने का सामर्थरखता है। मनुष्य में मनुष्यता के गुण रोपित कर उसे जीवन को सहज बनाने की शक्तिप्रदान करता है। आदि मानव से अतिमानव तक की यात्रा में मनुष्य ने अपने मस्तिष्क का उपयोग और उपभोग बहुत ही व्यापक और प्रभावशाली रूप में किया।आज जीवन का प्रत्येक क्षेत्र आधुनिकता से परिपूर्ण है। फिर चाहे हमारे जीवन की मूलभूत आवश्यकता रोटी कपड़ा मकान की बात हो या चांद पर घर बनाने की सब आसानी से साकार होता नज़र आ रहा है ,किंतु मानव मस्तिष्क केवल यांत्रिकी रूप से कार्य नहीं करता बल्कि वह मनुष्य की दूसरी अद्भुत क्षमता यथा उसके भावों,विचारों,संवेदनाओं को व्यक्त करने के लिए भी कार्यशील है।ज्ञात है कि मानव सभ्यता का विकास कई चरणों में हुआ जब मनुष्य ने घुम्मकड़ प्रवृत्ति को समाप्त कर एक जगह समूह में रहना प्रारंभ किया और संकेतों के माध्यम से अपनी आवश्यकता को व्यक्त करना सीखा। भाषा के वाचिक से लिखित रूप तक की यात्रा के साथ सामाजिक परिवेश स्थापित हुआ और भाषा केवल भाषा न रहकर मनुष्य के मनन,चिंतन और विचार को प्रकट करने का महत्वपूर्ण साधन बनी। बल्कि हमारी सभ्यता का आधार ही भाषा है जिसने मनुष्य को अन्य जीवों से भिन्न कर एक सामाजिक प्राणी बनाया। । "सहितस्य भाव: तत साहित्यम्" के अनुसार जो भावों को संचित करने वाला, सभी के हित के लिए हो ,साहित्य है।हिंदी भाषा और साहित्य लिखित परंपरा का अपना एक वृहद इतिहास है जो हमारी अमूल्य धरोहर है।इतिहास के विभिन्न कालखंडों में साहित्य का लेखन परंपरा का अध्ययन और अपने अपने शोध के आधार पर विद्वानों ने साहित्येतिहास ग्रंथों की रचना की ।। इन ग्रंथों में न केवल रचना और रचनाकारों के व्यक्तित्व और कृतित्व की जानकारी का संकलन है वरन उस युग की साहित्यिक प्रवृत्तियों का भी अध्ययन करने को मिलता है। उस समय की सामाजिक, राजनीतिक आर्थिक व्यवस्थाओं के साथ उपलब्ध साधन संसाधन और लोगों के मानसिक स्तर का पता चलता है। जिससे साहित्य को समझने में सहायता प्राप्त होती है।इसलिए आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने लिखा है -

"जबकि प्रत्येक देश का साहित्य वहां की जनता की चित्तवृत्तियों का संक्षिप्त प्रतिबिंब होता है, तब यह निश्चय है कि जनता की चित्तवृति में परिवर्तन के साथ-साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता चला जाता है । आदि से अंत तक इन्हीं चित्तवृत्तियों की परंपरा को परखते हुए साहित्य परंपरा के साथ उनका सामंजस्य बिठाना ही साहित्य का इतिहास कहलाता है । जनता की चित्तवृति बहुत कुछ राजनीतिक, सामाजिक, सांप्रदायिक और धार्मिक परिस्थिति के अनुसार होती है।"

इससे ज्ञात होता है कि साहित्य समाज का वह परिधान है जो जनता के जीवन में सुख-दुख, हर्ष -विषाद आकर्षण-विकर्षण के ताने- बाने से बुना जाता है । उसमें आत्मा का स्पंदन ध्वनित होता है और उसका प्रमुख कार्य जनता के जीवन की व्याख्या करना होता है। आदिकाल से लेकर 21 वीं सदी के वर्तमान तक का साहित्य पर जब हम दृष्टि डालते हैं तो हमें समाज का यथार्थ चित्र सामने दिखाई देता ।वर्तमान समय में साहित्य का परिवर्तित स्वरूप जहां साहित्यनवीन ज्ञान की संकल्पना और नवीन तकनीक सुविधा से युक्त है।

डिजिटल युग के इस दौर में जहां संपूर्ण विश्व एक गांव की तरह नजर आता है जिसमें एक व्यक्ति किसी देश का नहीं बल्कि विश्व का नागरिक हो जाता है डिजिटल क्रांति ने मनुष्य के सांस्कृतिक जीवन पर अभूतपूर्व प्रभाव डाला है | साहित्य की दुनिया भी इस नई स्थिति में उथल-पुथल के दौर से गुजर रही है। जहां साहित्य को कुछ अभूतपूर्व लाभ मिले हैं ,वही उसके समक्ष कुछ कठिन संकट भी आ खड़े हुए हैं।प्रिंट मीडिया से इलेक्ट्रॉनिक मीडिया व इंटरनेट तक की यात्रा ने साहित्य को कई लाभ उपलब्ध कराएं। कंप्यूटर ने जिस आभासी दुनिया का निर्माण किया उसमें उपलब्ध साहित्य को ऑनलाइन साहित्य अथवा डिजिटल साहित्य की संज्ञा दी गई। साहित्य लेखन की ये परंपरा कंप्यूटर या अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरण तथा इंटरनेट के माध्यम से विकसित हुई ।इसमें इलेक्ट्रॉनिक साहित्य या ई साहित्य , न्यू मीडिया साहित्य ,डिजिटल साहित्य, साइबर साहित्य,हाइपर टेक्स्ट साहित्य आदि शामिल है। डिजिटल साहित्य का अपना एक स्वरूप है जो बहुत विस्तृत और

नवीन शैली से युक्त है ।ई साहित्य या ऑन लाइन साहित्य मुद्रित माध्यम से पुस्तकों में भी उपलब्ध है। जिसमें परंपरागत साहित्य के अंतर्गत हिंदी साहित्य के प्राचीन युग से आधुनिक युग तक की रचनाएं हैं ।उनका पी.डी.एफ के रूप में वेबसाइटों पर उपलब्ध है। हिंदी समय,गद्यकोश ,कविताकोश, भारतकोश ,काव्यालय आदि वेब पृष्ठों पर साहित्य को पढ़ा जा सकता है। इसके फलस्वरूप व्यक्ति दुनिया के किसी भी कोने से अपना पसंदीदा साहित्य पढ़ सकता है। इसके अलावा डिजिटल व्यवस्था में साहित्य को न केवल पाठन,लेखन के रूप में अपितु दृश्य,श्रव्य माध्यम में भी प्रसारित किया जाता है। जो ऑडियो,वीडियो,एनीमेशन, मल्टीमीडिया तकनीकों का प्रयोग से अत्यंत प्रभावशाली रूप में सामने आया है। डिजिटल साहित्य की विशेषता यह भीहै कि परंपरागत साहित्य की अपेक्षा लेखक पाठक के बीच के वैचारिक संबंध प्रगाढ़ होते हैं। पाठक तुरंत रचनाकार की रचनाओं को पहचान कर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करता है। प्रतिक्रिया के परिणाम स्वरूप साहित्य का विश्लेषण तो होता ही है साथ ही साहित्यकार को अपनी लेखन शैली के सही और गलत मापदंडों का आभास रहता है। इस व्यवस्था ने लेखक अपने साहित्य का संपादन और प्रकाशन के लिए स्वतंत्र है।डिजिटल व्यवस्था में साहित्य सर्वप्रथम सन 1934 में ऑडियो बुक के रूप में आया ।जिसमे अनेक लघु कथाएं एवम किताबों के कुछ अध्यायों का संकलन मिलता है। मैकल हार्ट को पहला ई लेखक माना जाता है । इसी प्रकार 1994 में ऑनलाइन डायरी, और 1990 के पूर्वार्ध में हाइपर टेक्स्ट साहित्य की शुरुआत हुई। सन 1991 से 2003 तक यूनिकोड , एनकोडिंग वर्ड वाइड वेब का का चलन था इनके विकास के साथ लोग अपनी मातृ भाषा में कंप्यूटर का प्रयोग करने लगे और इस तरह इंटरनेट में साहित्य के विकास की पहली सीढ़ी रखी गई।

तत्पश्चात विकास के चरण में इंटरनेट में अनेक सुविधाएं प्राप्त हुई और साहित्य ने ब्लॉगिग, ई पत्रिका ,सोशल नेटवर्किंग साइट आदि का विकास हुआ। लोग अपने विचारों ,भावों को अपनी मातृ भाषा में व्यक्तिगत ब्लॉगों ,वेबसाइटों ई पत्रिकाओं में लिखने लगे।ई साहित्य के इतिहास में ब्लॉगिंग का योगदान महत्वपूर्ण है। विभिन्न विषयों पर बड़ी आसानी से ब्लॉग लेखक कार्य हो जाता है। किसी भी रचना में त्वरित लेखन, त्वरित प्रकाशन, त्वरित प्रतिक्रिया प्राप्त की जा सकती है। इसी प्रकार सोशल नेटवर्किंग साइट एक ऐसा माध्यम है जहां उपयोगकर्ता अपना व्यक्तिगत परिचय के साथ व्यक्तिगत संबंध स्थापित कर लेता है। इंटरनेट के माध्यम से सोशल नेटवर्किंग साइट में फेसबुक ,यूट्यूब इंस्टाग्राम, टिक टॉक, पिंटरेस्ट लिंक्डइन , व्हाट्सएप, ट्विटर ,स्नैपचैट ,मैसेंजर ,क्योरा, टंबलर, रेडिट आदि बहुत लोकप्रिय हैं जो मनोरंजन के साथ शैक्षणिक, साहित्यिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक विषयों से संबंधित है जो जीवन के प्रत्येक पहलू को समझने में सहायक भी । स्टेटिका के अनुसार व विश्व में सोशल नेटवर्किंग साइट के उपयोगकर्ताओं की संख्या खरबों में जा चुकी है। डिजिटल व्यवस्था में साहित्य का नया रूप ई पत्रिका के माध्यम से देखा जा सकता है, जो दैनिक, साप्ताहिक, और मासिक रूप से प्रकाशित होती हैं। हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं में यथा कविता, कहानी, उपन्यास, निबंध, नाटक, आलोचना,यात्रा वृतांत, जीवनी, आत्मकथा तथा शोध से संबंधित आलेखों के लिए साहित्यिक पत्रिकाओं ने अपनी उल्लेखनीय भूमिका निभाई है। इसमें हरिश्चंद्र मैगजीन ,ब्राह्मण, हिंदुस्तान ,सरस्वती ,मतवाला ,इंदु रूपाभ, कर्मवीर, हंस, जन्मकुंडली , नई कविता और वेब पत्रिका सृजन गाथा सम्मिलित है।

हिंदी साहित्यिक पत्रिका के अंतर्गत अर्गला, अहा जिंदगी, ओशो, टाइम्स, कथाक्रम कथाबिंब, कादम्बिनी, तद्भव, नवनीत, प्रभात, पुंज, पाखी, बया, रंगवार्ता, लमही, वागर्थ, हंस, शोधादर्श सेतु, समालोचन, अपनी माटी, साहित्य शिल्प, अभिव्यक्ति डॉट कॉम, स्वर्गविभा, वेब पत्रिकाओं में दैनिक साहित्य ई पत्रिका विशिष्ट ध्यान, अखंड ज्योति, अनंत अभिराम, अनुभूति, भारत दर्शन, भारत संदेश, गीत पहल, हिंदीकुंज, हिंदी नेस्टकॉम, हिंदुस्तान बोल रहा है, इंडिया टुडे, जनोक्ति, पूर्वाभास प्रवक्ता, शोधदर्श, शोध संचयन, परिकल्पना, ब्लॉगोत्सव, सीमापुरी टाइम्स सृजनगाथा स्वर्गविभा, वटवृक्ष, युगमानस, सुमन, समय, आदि ई पत्रिकाएं हैं जो ऑनलाइन उपलब्ध है। कुछ प्रमुख साहित्यिक ब्लॉग हैं हिंदी चिट्ठाजगत जानकी पुल बूंद बूंद इतिहास, साहित्यमंजरी, हमारी आवाज, हमकल्म, संवादी, नया जमाना मेरी जुबानी रचनाकार आदि। इसी प्रकार कुछ ब्लॉग लेखकों और साहित्यकारों के अपने नाम से ब्लॉग है, उदय प्रकाश,अंबुज,अजदक आदि। डिजिटल व्यवस्था में ब्लॉग साहित्य को विस्तार देने के साथ साहित्य संग्रह करने का बेहतरीन आधार है।

डिजिटल व्यवस्था में साहित्य के संरक्षण का संकट समाप्त हुआ है और किसी भी किताब की लाखों प्रतियां छापी जा सकती है, उससे सीडी इंटरनेट की स्मृति में सुरक्षित रखा जा सकता है। साहित्य के प्रचार प्रसार की क्षमता में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है और प्रकाशकों के द्वारा होने वाले शोषण से भी मुक्ति मिली है। नवीन लेखकों की संभावना बड़ी है मीडिया ने साहित्यकारों को आपस में जोड़ दिया है। अब यह दुनिया के हर भाषा में साहित्य का एक दूसरे के सतत संपर्क में रह सकते हैं। अब हिंदी की प्रसिद्ध साहित्यकार पत्रिकाएं जैसे हंस व तद्भव इंटरनेट संस्करण इंटरनेट पर उपलब्ध हैं, जिन्हें दुनिया में

कहीं भी बैठ कर व्यक्ति जब चाहे पड़ सकता है । वह सीधे संपादक से मंगवा सकता है और उस पर चर्चा भी कर सकता है। डिजिटल व्यवस्था में एक ओर इलेक्ट्रानिक मीडिया में टी. वी. व फिल्मों के विकास से साहित्य के आस्वादन के लिए साक्षरता की बाधा समाप्त कर दी है। किसी भी साहित्य का फिल्म रूपांतरण प्रत्येक दर्शक के आस्वादन को संतुष्ट कर पाता है ,जबकि पहले साहित्य को पढ़ना पड़ता था । साहित्य की मात्रा में काफी वृद्धि हुई है हजारों की मात्रा में धारावाहिक व चलचित्र बन रहे हैं और यह सभी न किसी ना किसी पटकथा पर आधारित होते हैं। इसी प्रकार से सामाजिक समस्याओं पर डॉक्यूमेंट्री फिल्में बनाई जा रही है जिनके लेखन भी साहित्यकार वर्ग प्रभावशाली तरीके से कर पाता है ।बहुत सी वेब पत्रिकाएं शुरू की गई जिन पर बड़ी संख्या में लेखन कार्य दिखाई पड़ता है इन सब स्थितियों ने साहित्यकारों के लिए आर्थिक संभावनाएं भी बढ़ाई हैं ।

डिजिट उपकरणों और उससे संबंधित व्यवस्था को देखते हुए मन में यह आशंका होती है कि क्या परंपरागत साहित्य और प्रचलित हो जाएगा साहित्य पढ़ने का चलन क्या केवल सूचना और ज्ञान के उपभोग तक ही सीमित रह जाएगा। आधुनिक युग के लेखक पाठकों श्रोता और विद्यार्थियों के इस दृष्टिकोण से निसंदेह हानिकारक है| ऐसी प्रौद्योगिकी अथवा व्यवस्था हमारे स्वविवेक और स्वज्ञान के अर्जन की क्षमता को कमजोर कर रही है। बैगर शुल्क और पाबंदी से ऐसी सुविधा कालाभ विद्यार्थियों में भटकाव ला रहा है।

डिजिटल युग ने वाटपेड, ईरीडर जैसी सेवाएं मुफ्त में पुस्तकें डाउनलोड करने की सुविधा देती हैं। लेकिन इन सुविधा से कहीं न कहीं हम परंपरागत साहित्य से, भौतिक पुस्तकों से अपना नाता तोड़ते तो नहीं जा रहे।

जब कि साहित्य का सृजन मशीनीकरण और भौतिकता से परे केवल भाव, विचारों, संवेदनाओं की समझ से होता है। मानव मनस्तिथि का सृजन जो दूसरे मन तक पहुंचे। इसलिए प्राचीन से आधुनिक युग के प्रसिद्ध साहित्यकार रचनाशैली से आज भी हमारे मनमस्तिष्क पर अपनी अनुभूति की जीवंत छाप रखे हैं। आज भी विद्यालय से महाविधालय तक की शिक्षा प्रणाली में साहित्य के अध्ययन में भौतिक पुस्तकों के महत्व को कम नहीं किया जा सकता। आज भी परंपरागत साहित्य ही एक ऐसा साधन है जिससे विधार्थियों स्वत: अध्ययन हेतु आतुर रहते हैं।

मेरा यह अनुभव रहा है कि किसी विद्यालय या महाविद्यालय कक्षा में हिंदी के शिक्षक द्वारा जब भावों, संवेदनाओं के साथ रस, अलंकार की अनुभूति के साथ किसी कविता का वाचनकर उसका शब्दार्थ, भावार्थ, और संदर्भ सहित व्याख्या समझाई जाती है उस समय विधार्थी साहित्य कोन केवल सुनता, समझता या ग्रहण करता है, अपितु उसके मर्म को आत्मसात कर लेता है| जो उसके जीवन में अविस्मरणीय हो जाता है। फिर वह रासो के वीर रस की रचना हो, कबीरजी का अध्यात्म या समाज सुधार हो, सूर की कृष्णलीला हो या तुलसीजी के राम हो, आधुनिक युग के भारतेंदुजी का नवजागरण का बिगुल हो, द्विवेदीजी का जागरण सुधार काल, पंत, निराला, महादेवी और प्रसादजी की साहित्य साधना की छाया हो या केदारनाथजी का प्रगतिवाद और अज्ञेयजी की प्रयोग की दृष्टि प्रयोगवाद और नई कविता की विचार शैली सब सीधे समझ पाते हैं। कक्षा में जब मुंशीजी के होरी के चरित्र का अंकन होता है तो छात्र को अपने में कक्षा में होरी नजर आता है। राष्ट्रवादी रचना का स्वादन उसे देशभक्ति की भावना से ओतप्रेत कर देता है। कभी वो निराला, महादेवी की कविता में करुणा की अनुभूति करता है तो पंत की रचना से प्रकृति से जुड़ता है।

कहने का तात्पर्य यही है की डिजिटल व्यवस्था ने भले ही साहित्य की उपलब्धता का क्षेत्र विस्तारित किया हो लेकिन साहित्य तो अनुभूति का विषय जिसे हम परंपरागत साहित्य रूप में ही प्राप्त कर सकते हैं।

डिजिटल व्यवस्था में जहां साहित्य का स्वरूप परिवर्तित हुआ है वहीं साहित्यिक जगत के समक्ष ऐसी समस्याएं खड़ी कर दी है जिनसे निजात पाना आसान नहीं। साहित्य की मात्रा तो बढ़ रही है किंतु उसका गुणात्मक स्तर घटता जा रहा है। सोशल नेटवर्किंग के अंतर्गत व्हाट्सएप, फेसबुक, ब्लॉग ,ट्विटर आदि के माध्यम से कई संवेदनशील मुद्दे उठ खड़े होते हैं। कौतूहल, हिंसा और सेक्स जैसी प्रवृत्तियां को को उकसाने जैसे संदेश और कथन से व्यक्ति की नैतिक आचरण पर प्रभाव पड़ रहा है। गलत और अफवाहों से भरी सूचनाओं का प्रसार सोशल नेटवर्किंग का सबसे बड़ा दोष है।। कई लोग मानसिक तनाव के शिकार के साथ मानसिक रूप से विकृत हो रहे हैं। बच्चों और युवाओं पर सीधा असर नजर आता है। साइबर क्राइम को बढ़ावा मिला है।

साहित्य में उच्च विचार व चिंतन गौण एवं मनोरंजन का व्यापार महत्वपूर्ण होता जा रहा है मनुष्य यथार्थवाद और काल्पनिकता में अंतर करना ही भूल गया है। बाजार में गूगल जैसे प्रतिष्ठानों ने हिंदी व अन्य लोग परिभाषा हेतु कुछ सॉफ्टवेयर बनाए हैं और यूनिकोड के विकास के कारण अब हिंदी जैसी भाषा इंटरनेट पर ठोस रूप में उपस्थिति दर्ज करा पाई है। संक्रमण के इस दौर में डिजिटल व्यवस्था का महत्व है | इस व्यवस्था में साहित्य की प्रचार-प्रसार क्षमता व नवोदित

लेखकों के उभरने की दृष्टि से भी सहायक है किंतु हमें साहित्य की मूल उद्भावनाओं के सरंक्षण की ओर भी पूर्ण सक्रियता के साथ ध्यान देने की अवश्यकता है। साहित्य की सशक्त अभिव्यक्ति के साथ एक जिम्मेदारी का एहसास भी जरूरी है। सोशल नेटवर्किंग की विभिन्न कम्पनियों को एक ऐसी पॉलिसी बनाना होगी जिससे विषम परिस्थितियों और दुर्घटनाओं से बचा जा सके। लेखक और पाठक और उपयोगकर्ता भी अपनी जिम्मेदारी समझे और इन तकनीकी सुविधाओं का उपयोग सतर्कता के साथ करने और जनमानस में इसके सदुपयोग हेतु जागृति लाने का प्रयास करें। तब ही सही अर्थों में हम साहित्य की साधना कर पाएंगे।

संदर्भ:

1. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, 2019,
2. डॉ कुसुमराय, हिंदी साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास, 2020
3. https://www.setumag.com/2018/05divya online-literature.htm
4. actualdadiliterature.com